सम्राज्यवादी इतिहासलेखन (Imperialist Historiography)

(B.A./M.A. History – Paper: Historiography)

🔹 1. परिचय

“Imperialist Historiography” या सम्राज्यवादी इतिहासलेखन वह दृष्टिकोण है जिसके अंतर्गत इतिहास को औपनिवेशिक शासकों की दृष्टि से लिखा गया।
यह दृष्टि 18वीं–19वीं सदी में यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों, विशेषकर ब्रिटिश शासन के दौरान, बहुत प्रभावी रही।

इस इतिहासलेखन का मुख्य उद्देश्य था —

> “शासित समाजों की पिछड़ेपन को दिखाकर साम्राज्यवादी शासन को वैध ठहराना।”

🔹 2. पृष्ठभूमि

जब यूरोपीय शक्तियों ने एशिया और अफ्रीका के देशों पर नियंत्रण स्थापित किया, तब उन्होंने अपने शासन को “सभ्यता मिशन (Civilizing Mission)” के रूप में प्रस्तुत किया।
इस मिशन के तहत उन्होंने यह प्रचार किया कि —

वे उपनिवेशों में शांति, कानून और आधुनिकता ला रहे हैं।

स्थानीय समाज अराजक, अवैज्ञानिक और अविकसित हैं।

इतिहास लेखन का उपयोग इस तर्क को मजबूत करने के लिए किया गया।

🔹 3. प्रमुख विचार और विशेषताएँ

1. यूरोपीय श्रेष्ठता (Eurocentrism)

इतिहास को यूरोप के दृष्टिकोण से लिखा गया।

भारतीय सभ्यता को “स्थिर” और “प्रगति-विहीन” बताया गया।

2. औपनिवेशिक शासन का औचित्य

ब्रिटिश शासन को भारत में राजनीतिक एकता और कानून व्यवस्था का रक्षक बताया गया।

3. भारतीय समाज की आलोचना

जाति, धर्म और परंपरा को “पतन” के कारण के रूप में दिखाया गया।

भारत की स्वतंत्र शासन-क्षमता को नकारा गया।

4. द्वंद्वात्मक दृष्टि

पश्चिम = प्रगतिशील, तर्कसंगत

पूर्व = जड़, अंधविश्वासी

- 4. प्रमुख सम्राज्यवादी इतिहासकार और उनके विचार

इतिहासकार प्रमुख कृति / दृष्टिकोण विचारधारा का सार

James Mill History of British India (1817) भारत को “अंधकार युग” में बताया; ब्रिटिश शासन को सुधारक कहा।
Thomas Babington Macaulay Minute on Indian Education (1835) भारतीय शिक्षा और संस्कृति को नीचा दिखाया, अंग्रेजी शिक्षा को श्रेष्ठ बताया।
Vincent A. Smith Early History of India भारतीय इतिहास को “विदेशी शासकों की कथा” के रूप में प्रस्तुत किया।
John Seeley Expansion of England ब्रिटिश साम्राज्य को “इतिहास की सबसे महान उपलब्धि” कहा।

🔹 5. भारतीय इतिहास के प्रति उनका दृष्टिकोण

प्राचीन भारत – धार्मिक अंधविश्वास से भरा हुआ।

मध्यकालीन भारत – मुस्लिम आक्रमणों से "अराजक"।

आधुनिक काल – ब्रिटिश शासन द्वारा "संस्कृत और सभ्य" बनाया गया।

👉 इस प्रकार भारत का इतिहास "अंधकार से प्रकाश" की यात्रा के रूप में दिखाया गया —
और "प्रकाश" का स्रोत ब्रिटिश शासन को बताया गया।

🔹 6. समालोचना (Criticism)

1. यह इतिहास एकतरफ़ा और पूर्वाग्रही था।

2. भारतीय जनता की भूमिका, संघर्ष और सांस्कृतिक चेतना को नज़रअंदाज़ किया गया।

3. यह दृष्टि औपनिवेशिक प्रचार का हिस्सा बन गई।

4. राष्ट्रवादी और सबाल्टर्न इतिहासकारों ने बाद में इसे चुनौती दी और भारतीय दृष्टि से इतिहास पुनर्लिखा।

🔹 7. महत्व और प्रभाव

इस इतिहासलेखन ने भारतीय इतिहास की दिशा को प्रभावित किया।

राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसके प्रतिकार में "भारतीय दृष्टिकोण" से इतिहास लिखना प्रारंभ किया।

इसने यह प्रश्न उठाया कि —
"क्या इतिहास वस्तुनिष्ठ हो सकता है या वह सदा किसी न किसी सत्ता की भाषा होता है?"

🔹 8. निष्कर्ष

सम्राज्यवादी इतिहासलेखन ने इतिहास को राजनीतिक औज़ार बना दिया था।
यह शासकों के हित में लिखा गया इतिहास था —
परंतु, इसी ने आगे चलकर राष्ट्रवादी और उपवंचित (Subaltern) इतिहासलेखन की नींव भी रखी,
क्योंकि इतिहासकारों ने महसूस किया कि इतिहास को जनता की दृष्टि से पुनर्लेखन आवश्यक है।

📚 सुझाए गए संदर्भ

1. James Mill – History of British India

2. Vincent Smith – The Early History of India

3. R. C. Majumdar – Historiography in Modern India

4. Ranajit Guha – On Some Aspects of the Historiography of Colonial India

5. Irfan Habib – Essays in Indian History